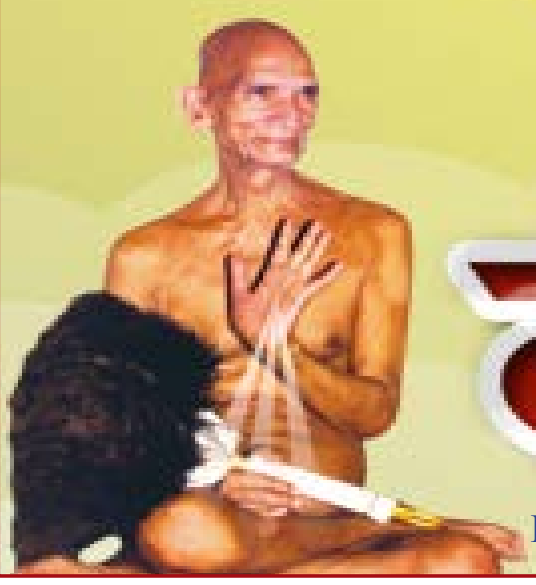

जैनाचार

Issue: 153
08 Sept. 2020
www.jainachar.com Daily
Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

pjukrh ls dg nks FkkMh vkj cMh gks tk,

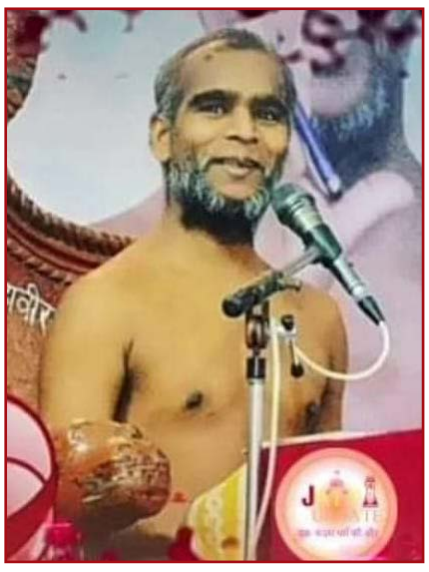

मुश्किलों से कह दो थोड़ी ओर बड़ी हो जाये।
चुनौती से कह दो थोड़ी ओर बड़ी हो जाये।
अगर नापना चाहते हो मेरी सामर्थ्य तो
आसमान से कर दो थोड़ा ओर बड़ा हो जाये।

आत्माथियों, पारसनाथ भगवान ने जीन जीवो के ऊपर उपकार किया वही जीव उनके ऊपर उपसर का निवारण करने के लिए आए। किसी भी क्षेत्र में हमें हताश होने की आवश्यकता नहीं हैं। परिस्थितियां किसी भी तरह की आती है उसमें जो डटे रहता है वह उसमें सफल हो जाते हैं।

भगवान महावीर के तत्कालीन समय वेदों में हवन में पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी उसी समय महावीर स्वामी जीवो अभय के लिए डर के खड़े रहे हैं। तीर्थंकर मे कर्मों के जाल को तोड़कर अपने परम शांति के सिहासन पर आरुढ़ हुए हैं। दुनिया के आसन सिहासन तो बहुत लोग प्राप्त कर लेते हैं पर अपने ने शांति के सिहासन पर भव्य पुरुषार्थी जीव ही बैठ पाता है। युवाओं कोरोना जैसे महामारी से डरने की आवश्यकता नहीं जैसे सर्दी खांसी मलेरिया आदि बीमारी है वैसे ही कोरोना यह बीमारी है। कोरोना से काम और उसके डर से अधिक लोग मर रहे है। जो परिस्थिति सामने हैं उसका डट कर मुकाबला करिए तो कोरोना यू छूमंतर हो जाएगा।

आत्माथियो! आत्म स्वरूप की उपलब्धि होने वाले को ही परमात्मा पद की प्राप्ति होती है। दिगंबर संत का रहने का कोई ठिकाना नहीं है। यह संत व्यवस्था में नहीं सहज अवस्था में जीते हैं। यह संत सुन्यागार, वृक्षमूल में, कोटर में, उद्यान में, वन में, चैत्यालय में, जिन भवन में विराजते हैं और वही साधना करते हैं। स्वाध्याय और ध्यान में अपना समय व्यतीत करते हैं।

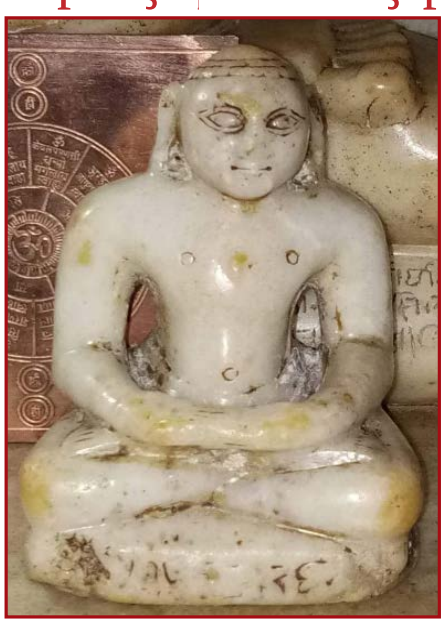

dLck ,ye] ftyk 'kkeyh ds fnxEcj tSu efUnj dh vfr'k; iw.kZ peRdkjh pUæçHkq th dh çkphu çfrek lEor 1261

मन्दिर में पूरे दिन कोई ताला नही लगाया जाता है, न ही मन्दिर जी की देखरेख के लिए कोई चौकीदार या माली रहता है। मन्दिर जी मे बस रात्रि में ही ताला लगाया जाता है। श्री चन्द्रप्रभु जी की यह प्रतिमा मन्दिर जी से दो तीन बार चोरी हो चुकी है। लेकिन अतिशय या चमत्कार यह है कि जब भी यह प्रतिमा चोरी हुई, 10–15 दिन के बाद चोर चुपचाप मन्दिर में यथास्थान पर रख कर चला जाता है।

एक बार तो कोई स्त्री इस प्रतिमा को चोरी करके ले गयी। उसे रात्रि में स्वप्न में आभास हुआ कि उसने प्रतिमा को चोरी से घर लाकर अनर्थ कार्य किया है, कुछ दिन बाद उस स्त्री का पति किसी दुर्घटना से मर गया। तब उस स्त्री को अपनी भूल, गलती का अहसास हुआ, तो उसने चुपचाप मन्दिर में इस प्रतिमा को रख दिया।

चोरों द्वारा चोरी के इस प्रयास की घटना में केवल दो गुल्लक के ताले ही तोड़े गए, लेकिन कुछ नुकसान नही हुआ, जबकि रात को 3.00 बजे यूपी पुलिस भी अचानक गश्त पर मौजूद रहने से एक चोर मौके पर पुलिस की गिरफ्त में आ गया। इसे चमत्कार कहे या अतिशय, जिन धर्म के प्रति जिसकी जैसी आस्था, श्रद्धा है, वह ऐसा समझ सकता है। अतिशयकारी यह चन्द्रप्रभु जी प्रतिमा सम्वत 1261 की है।

प.पू. आचार्य श्री अनुभवसागरजी महाराज जी से दिक्षीत प.पू. मुनि श्री अनुश्रवण सागरजी महाराज के समाधि दिवस पर शत शत नमन

ckjkcadh-- tSu efnj esa efu Jh foKoK lkxj th us yh lekf/k

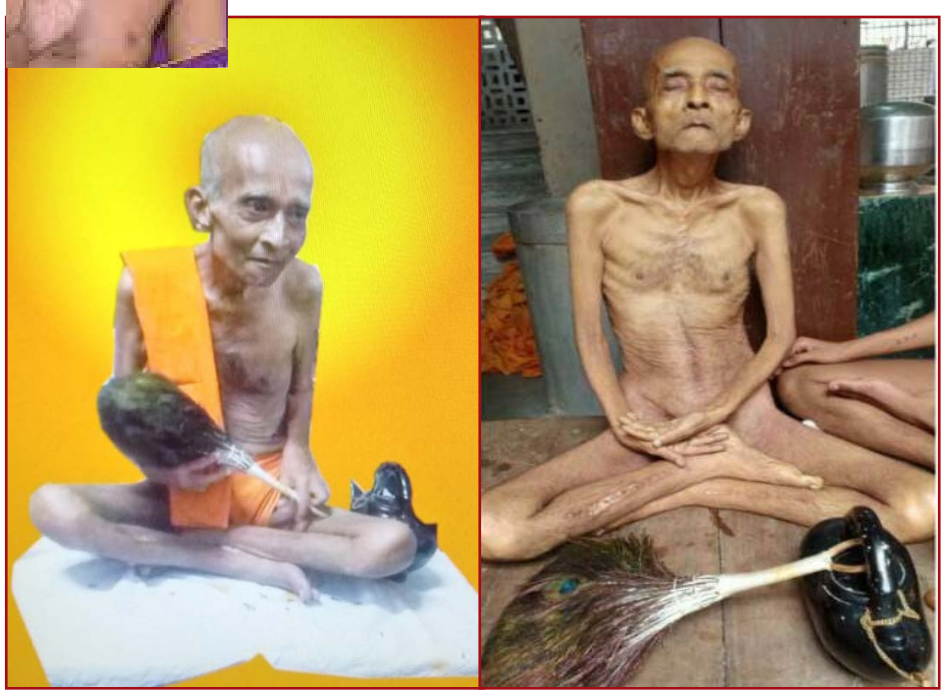

जनपद मुख्यालय पर सरावगी स्थित दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में सोमवार को मुनि विश्वज्ञ सागर जी ने सल्लेखना पूर्वक समाधि धारण कर ली। उन्हें समाधि दशा में ही ढोल नगाड़ों के साथ दोपहर बाद जैन समाज के श्मशान ले जाया गया। मुनि श्री का अंतिम संस्कार किया गया। शहर के सरावगी क्षेत्र स्थित बड़ा जैन मंदिर में भाव लिंगी संत आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी का चातुर्मास चल रहा है। अभी आचार्य श्री की सानिध्य में ही दशलक्षण और क्षमावाणी पर्व सम्पन्न हुआ। सकल दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष कमलेश कुमार जैन ने बताया कि आचार्य श्री ने गत 28 जून को अपने 25 पिच्छी धारी साधुओं के संघ के साथ मंदिर जी मे मंगल प्रवेश किया था। मुनि श्री विश्वज्ञ सागर जी महाराज इसी संघ में शामिल थे।

84 वर्षीय मुनि श्री ने सोमवार को सल्लेखना पूर्वक समाधि धारण की। समाधि धारण करने से पूर्व ही यहां श्रद्धालु आने शुरू हो गए थे। मुनिश्री को समाधि दशा में ही एक सुसज्जित आसन पर आसीन किया गया। णमो कार मंत्र के उच्चारण के बीच ढोल बज रहे थे। मंदिर से उन्हें कमरियाबाग स्थित जैन समाज के श्मशान पर ले जाया गया। यहां श्रद्धा और विधि विधान से मुनि श्री का अंतिम संस्कार किया गया। बता दे कि जैन समाज में सल्लेखना वो प्रक्रिया साधू के जीवन की अंतिम साधना होती है जो मृत्यु करीब जानकर स्वयं ही सब कुछ त्याग देते है अंत में समाधि प्राप्त होती है।

पूर्व नाम श्री देवेंद्र कुमार जी जैन आपका जन्म धार्मिक एवं संतो की पावन भूमि एटा में हुआ। वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं अनुभवी राह प्रदर्शक के पद पर श्री दिगम्बर जैन वीर मण्डल एटा में बहुत ही लम्बे समय तक कार्यरत रहे। बहुत ही मेहनत एवं लगन से उन्होंने वीरमण्डल एटा को एक ऊँचे आयाम तक पहुँचाया।

शुरूआत से ही आप धार्मिक माहौल में रहे एवं पूरे परिवार को धर्म से जोड़ा एवं उचित समय में ऐलक दीक्षा लेकर गुरु विमर्श सागर जी महाराज के चरणो में अपनी आत्मा के कल्याण हेतु निकल पड़े मोक्ष मार्ग की कठिन डगर पर। जिस मंज़िल की ओर उन्होंने जो मार्ग अपनाया था, उन्होंने उस मोक्ष मार्ग पर मुनि दीक्षा लेकर समाधि मरण को प्राप्त किया। ऐसे दिव्य पुरुष महान आत्मा एटा गौरव प.प. मुनि विश्वज्ञ सागर जी महाराज के चरणो में भाव भीनी विनयांजलि...जैसा उनका जीवन रहा वैसी ही उनकी सलेखना और समाधि रही।

अभिषेक जैन लुहाडीया रामगंजमण्डी